शोध सारांश

बौद्ध अर्थशास्त्र वर्तमान प्रचलित समय में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज की स्थिति को देखा जाये तो समाज में जाति असमानता, अन्याय, भेद-भाव एवं धार्मिक अंधविश्वास के कारण गरीबी, शोषण, अत्याचार,भूखमरी,अशिक्षित,बेरोजगारी,लूट-मार, चोरी, धार्मिक युद्ध, असहिष्णुताबढ़ती जा रही है।समाज में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो पैसे के लिए दूसरों की जान तक ले लेते हैं, इस प्रकार से गलत तरीके से आजीविका कमाते हैं। शराब, शस्त्र, व्यक्ति का व्यापार तथा देह व्यापार आदिऐसे घिनौने कार्य करते हैं। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि आज के दौर में बौद्ध अर्थशास्त्रकी अत्यंतआवश्यकता है क्योंकि यह अहितआजीविका से ज्यादा व्यक्ति को महत्व देता हैताकि व्यक्तिअपनीयोग्यता के अनुसार अपनी आजीविका सही ढंग से चलासके।व्यक्तिको ऐसाव्यापारया कार्य करना चाहिए जिससेसमाज पर गलत प्रभाव न पड़े बल्कि समाज को उनके द्वारा किए कार्यों सेफायदामिले तथा समाज में समानता, स्वतंत्रता एवं बन्धुता का निर्माण हो सके।

बौद्ध अर्थशास्त्रसम्यक आजीविका को आधार मानकर चलता है यह गलत तरीके से आजीविका चलाने वालोंकाविरोध करता है,बौद्ध अर्थशास्त्र हमें बताता है कि व्यक्त को ऐसा काम करना चाहिए जिसमें कम परिश्रम और ज्यादा लाभ हो तथा अपनी आध्यात्मिक विकास के लिए समय निकाल सके। बौद्ध अर्थशास्त्र कामुख्य उद्देश्य गरीबी मिटनाएवं नवीन उद्योगोंकोस्थापित करना है।

बौद्ध अर्थशास्त्रके अनुसार व्यक्ति को वस्तु संग्रह की प्रवृत्ति नहीं रखनी चाहिए बल्कि दान देने की प्रवृति निर्माण करनी चाहिए। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने केलिए बौद्ध अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

Research Abstract

Buddhist Economics is very important at the present time, because there can be seen poverty, exploitation, oppression, starvation, illiteracy, unemployment, fire and sword, theft, religious wars, and intolerance are increasing due to caste inequality, injustice, discrimination and religious superstition in the society. In the society, there are individuals who take the lives of others for the sake of money. Thus, likewise people earn their livelihood by unfair means. They do abominable business like making alcohol, weapons, and do prostitution, trafficking, etc. Seeing the present situation, this can be said that there is the urgent need of Buddhist economics in the society, because it does emphasis on individual rather than unfair evil livelihood, so that one can earn his livelihood through his ability. One should do such business which don't have bad impact upon the society, instead society may get the advantage of the work done by them and sense of equality, independence and fraternity can be established in the society.

Buddhist economics regards perfect livelihood as base. This opposes the earning of evil or unfair livelihood. Buddhist economics tells us that we should do such works in which there is less labour and more profit and one have time for the development of the spiritual self. The chief objective of the Buddhist economics is the removal of poverty and establishment of new industries.

According to Buddhist economics individual should not have the tendency of collecting things rather they should build a tendency to

donate. It’s evident from the above description that the relevancy of the Buddhist economics is increases to strengthen the present Indian economy.